प्रातः क्लास 18-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद हैं।

ओमशान्ति। सिर्फ बाप को ही याद करते हो या और भी कुछ याद आता है। क्योंकि बच्चों को स्थापना भी याद होनी है और विनाश भी याद करना है। पालना भी याद होनी है। क्योंकि साथ2 इकट्ठा चलता है ना। जैसे कोई बैरीस्टरी पढ़ते हैं तो उनको मालूम है मैं बैरीस्टर भी बनुंगा, घर भी बनाऊंगा। बैरीस्टरी की पालना भी तो करेंगे ना। जो भी पढ़ेगा उनका नजारा आगे रहेगा। तुम जानते हो हम अभी स्थापना कर रहे हैं। पवित्र दुनिया स्थापन कर रहे हैं। इसमें योग बहुत जरूरी है। याद से ही हमारी आत्मा जो पतित बन गई है वह पावन बनेगी। तो हम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया में जाकर राज्य करेंगे। यह बुधि में आना चाहिए। सभी इम्तहानों में सबसे बड़ा इम्तहान वा सभी पढ़ाईयों से ऊंच है। पढ़ाई तो अनेक प्रकार के होते हैं ना। वह तो सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। और वह सभी पढ़ाईयां इस दुनिया के लिये हैं। पढ़कर फिर उनका फल यहां ही पावेंगे। बैरीस्टर वा कुछ भी बनेंगे फल यहां ही पावेंगे। तुम बच्चे जानते हो इस बेहद की पढ़ाई का फल हमको नई दुनिया में मिलना है। वह नई दुनिया कोई दूर नहीं है। अभी संगम युग है। नई दुनिया में ही हमको राज्य करना है। बाप की याद से ही आत्मा प्युर बनेगी। फिर यह भी याद रहना है हम पवित्र बनेंगे तो फिर इसअपवित्र दुनिया का विनाश भी जरूर होगा। सभी पवित्र नहीं बनेंगे। तुम बहुत थोड़े हो। जिनकी ताकत है। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ताकत अनुसार ही सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बनते हैं। ताकत तो हर बात में चाहिए। यह है ईश्वरीय माईट। इनको योगबल की माईट कहा जाता है। बाकी और सभी है जिस्मानी माईट। यह है रूहानी माईट। बाप कल्प2 कहते हैं हे बच्चों मामेकं याद करो। सर्वशक्तिवान बाप को याद करो। वह तो एक ही बाप है। उनको याद करने से ही आत्मा पवित्र बनेगी। यह बहुत अच्छी बातें हैं धारण करने की। जिनको यह निश्चय नहीं है कि हमने 84 जन्म लिये हैं उनकी बुधि में यह बातें बैठेंगी नहीं। जो सतोप्रधान दुनिया में आये थे वे अभी तमोप्रधान में हैं। वही आकर जल्दी निश्चय बुधि होंगे। कुछ भी नहीं समझते हैं। तो पूछना चाहिए। पूरी रीति समझे तो बाप को याद भी करे। समझेंगे नहीं तो याद भी नहीं कर सकेंगे। यह तो सीधी बात है। हम आत्माएं जो सतोप्रधान थी वही फिर अभी तमोप्रधान बने हैं। जिनको यह निश्चय होगा यह कैसे समझें कि हमने 84 जन्म लेते हैं। वा बाप से वरसा लिया हुआ है। तो वह पढ़ाई में पूरा ध्यान ही नहीं देंगे। समझा जाता है इनके तकदीर में न है। कल्प पहले भी नहीं समझा था। इसलिये याद कर न सकेंगे। यह है ही भविष्य के लिये पढ़ाई। न पढ़ते हैं तो समझा जाता है कल्प2 नहीं पढ़े थे। अथवा थोड़ी मार्कस से पास हुये थे। स्कूल में भी बहुत फेल होते हैं। नम्बरवार ही पास होते हैं। जो होशियार हैं वह पढ़कर फिर पढ़ाते भी हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट हूं। बच्चे भी कहेंगे हम भी सर्वेन्ट हैं। हरेक भाई बहन का कल्याण करना है। बाप हमारा कल्याण करता है, हमको फिर औरों का कल्याण करना है। सभी को यही समझाना है बाप को याद करो तो बाप कट जाये। जितना2 जो बहुतों को पैगाम पहुंचाते हैं वह बड़ा पैगम्बर कहेंगे। बहुतों को पैगाम देते हैं। उनको ही महारथी अथवा घोड़ेसवार कहा जाता है। प्यादे फिर भी प्रजा में चले जाते। इसमें भी बच्चे समझते हैं कौन2 साहुकार बन सकेंगे। यह ज्ञान बुधि में रहना चाहिए। तुम बच्चे सर्विस के लिये निमित्त बने हुये हो। सर्विस के लिये ही जीवन दे दिया है तो पद भी ऐसे पावेंगे। उनको मित्रसम्बन्धियों आदि को कोई प्रवाह नहीं है। मैं अपना हाथ पांव वाला हूं। बांधा तो नहीं जा सकता। अपने को स्वतंत्र रख सकते हैं। मैं क्यों बन्धन में फंसुं। क्यों नहीं बाप से अमृत लेकर अमृत का दान ही दूं। मैं कोई रीढ़ बकरी थोड़ेही हूं जो कोई हमको बांधे। क्या करेंगे। शुरू में तुम बच्चों ने कैसे अपने को छुड़ाया। रोड़ियां मार, हाय हाय कर बैठ गये। तुम कहेंगे हमको क्या प्रवाह है। हमको तो स्वर्ग की स्थापना करनी है। या यह काम बैठ करें। वह मस्ती चढ़ती जाती है। जिसको भोलाई मस्ती कहा जाता है। हम भोला के सन्तान हैं। तुम जानते हो भोला से हमको क्या प्राप्त होता है। भोला हमको पढ़ा रहे हैं। नाम तो उनके बाप का है परन्तु कोई2 नाम बहुत मीठा होता है। अभी हम भोलाई मस्त बने हैं। बाप डायरेक्शन तो बहुत सहज है।

देते हैं। बुधि भी समझती है बराबर हम बाप को याद करते2 सतोप्रधान बन जावेंगे और विश्व के मालिक भी बनेंगे। यह तात लगी हुई है। बाप तो हरदम याद में रहना चाहिए। सामने बैठे हो ना। यहां से बाहर निकले और भूल जावेंगे। यहां जितना नशा चढ़ता है उतना बाहर में नहीं रहता। भूल जाते हैं। तुमको भूलना न चाहिए। परन्तु तकदीर में नहीं है तो यहां बैठे भी भूल जाते हैं। बच्चों के लिये म्युजियम वा गांवरों में सर्विस करने लियेप्रबन्ध हो रहा है। टाईम तो पड़ा है ना। बाप तो कहते हैं जल्दी2 करो। परन्तु ड्रामा में जल्दी हो नहीं सकता। बाबा तो बहुत कहते रहते हैं यह यह बनाओ। गांवरों में सर्विस करने जाओ। इसके लिये नशा जरूर चाहिए। परन्तु फिर समझते हैं विचारों पर काम बहुत है। बाप तो कहते हैं ऐसी मशीनरी हो जो हाथ डाले और चित्र तैयार हो निकले। यह भी बाप समझाते रहते हैं। अच्छे2 बच्चों को माया और ही नाक से अच्छी रीत पकड़ती है। जो अपने को महावीर समझते हैं उन्हों को ही माया के बहुत तूफान आते हैं। फिर वह किसकी भी प्रवाह नहीं करते हैं। छिपाये लेते हैं। आन्तिरीक दिल सच्चा नहीं है। सच्चे दिल वाले ही स्कालरशिप लेते हैं। शैतानी दिल चल न सके। शैतानी दिल से अपना ही बेरा गर्क करते हैं। सब को शिव बाबा से काम है। यह तो सबसे पतित है। फिर यही पहला नम्बर पावन बनते हैं। यह तो तुम सा0 भी करते हो। उनको भी बनाने वाला शिव बाबा है। शिव बाबा को याद करे तब ऐसा बने। बहुत जगह बच्चे लुनपानी हो रहते हैं। अपना ही खाना खराब करते हैं। देहअभिमानी हो रहते हैं। जो महारथी बनते हैं उनको माया और अच्छी रीत नाक से पकड़ती हैं। लुन पानी भी अच्छे2 अन्यन्य ही बनते हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लुन पानी कर देती है। फिर कोई काम के ही नहीं रहते। उम्र ही खत्म हो जाती है। बाबा समझते हैं माया बड़ी जबरदस्त है। जैसे चूहा काटता है तो मालूम भी नहीं पड़ता है। माया भी ऐसी चुहरी है जो महारथियों को ऐसा आराम से काटती है जो उनको कुछ पता भी नहीं पड़ता है। इसलिये बाबा कहते हैं महारथियों को ही खबरदार रहना है। वह खुद समझते नहीं हैं कि हमको माया ने गिरा दिया है। लुन पानी बना दिया है। समझना चाहिए लुन पानी होने हम बाप की सर्विस कर न सकेंगे। अन्दर ही बज जलते रहते हैं। देह अभिमान है तो जलते हैं। वह अवस्था तो है नहीं। याद का जौहर भरता नहीं हैं। इसलिये बहुत खबरदार रहना चाहिए। माया बड़ी तीखी है। तुम्हारा मेहनत आधा तो एकदम खत्म कर देती हैं। जब तुम युध के मैदान में हो तो माया भी छोड़ती नहीं हैं। आधा मेहनत तो जरूर खलास कर ही देती है। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कई अच्छे2 बैठे2 भी पढ़ाई बन्द कर और घर बैठजाते हैं। अच्छे2 नामी ग्रामी जो हैं उन पर माया का वार जरूरी होता है। समझते हुये भी बेपरवाह चलते रहते हैं। थोड़ी बात में झट लुन पानी हो पड़ते हैं।

बाप समझाते हैं देह अभिमान के कारण ही लुन पानी होते हो। सर्विस को धोखा होता है। बाप कहते यह भी ड्रामा। जो कुछ देखते हैं कल्प2 ड्रामा चलता रहता है। कब नीचे ऊपर अवस्थाएं होती रहती हैं। कब ब्रह्माचारी बैठतीहै। कब तो खूब खुश खबरी सर्विस के अच्छे2 लिखते रहते हैं। नीचे ऊपर होता रहता है। कब हार कब जीत। पाण्डवों की माया से कब हार कब जीत होती है। अच्छे2 महारथी भी हिलजाते हैं। माया एकदम जैसे कि तबाही बना देती है। कई गिर भी पड़ते हैं। इसलिये जहां भी रहो सर्विस करते रहो। तुम निश्चित बने हुये हो सर्विस के लिये। तुम लड़ाई के मैदान में हो ना। जो बाहर वाले गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं यहां वालों से बहुत तीखे चले जाते हैं। माया के साथ पूरी युध चलती रहती है। सेकण्ड व सेकण्ड कल्प पहले मिसल तुम्हारा पार्ट चलता रहता है। तुम कहेंगे 4900 वर्ष पास हुये हैं। बाकी 7-8 वर्ष हैं। इतना समय पास्ट हो गया। क्या2 हुआ है वह भी बुधि में है। सारा ज्ञान बुधि में है। जैसे बाबा में ज्ञान है, इस दादा में भी आना चाहिए। बाबा बोलते हैं तो जरूर दादा भी बोलते होंगे। तुम बच्चे भी जानते हो कौन2 अच्छे दिल साफ हैं। दिल साफ जो है वही दिल पर चढ़े रहते हैं। उनमें लुन पानी का स्वभाव ही नहीं रहता। सदैव हर्षित

१८-११-६८

रहते हैं। उनका मुड कब नहीं फिरेगा। यहां तो बहुतों की मुड ऐसी फिर जाती है बात मत पूछो। सिकल जैसे भंगी चुहरे निसल बन जाती हैं। माया ने इस समय सभी को चुहरे बना दिया है। भुत पलिती चुहरे हैं ना। अपन को चुहरी कहते हैं। बाबा हम भुत पलिती को आकर शुध बनाओ। कहते भी हैं हम पतित हैं। पतित उस चुहरे से भी बदतर होते हैं। डिविल चुहरे बन जाते हैं। क्योंकि विकार में भी जाते हैं। विकार में भी जाते विचरा भी साफ करते हैं। उनको है सबसे जोती अधम गति। अभी पतित पावन बाप को बुलाया है आकर भुत पलिती कपड़े धोओ। (बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करते रहो। तो तुम्हारे कपड़ साफ हो जायेंगे। मेरी श्रीमत पर चलते रहो। न चलने वाले का कपड़ा साफ नहीं होगा। आत्मा शुध होगी ही नहीं है। बाप तो दिन रात इस पर जोर देते रहते हैं अपन को आत्मा समझो। देह अभिमान में आने से ही तुम घुटका खाते हो। जितना2 ऊपर चढ़ते जाते हो खुशी जमा होती जाती है। हर्षित मुख रहता है। बाबा जानते हैं अच्छे2 फर्स्ट क्लास है परन्तु अन्दरनी हालत देखो तो गल रहे हैं। देह अभिमान के आग में जल रहे हैं। समझते नहीं हैं यह बिमारी कहां से आई। बाप कहते हैं देहअभिमान से यह बिमारी आती है। देहीअभिमानी को कब बिमारी नहीं होगा।। बहुत अन्दर में जलते रहते हैं। बाप तो कहते हैं बच्चे देही अभिमानी भव। पूछते हैं यह रोग क्यों लगा है। बाप कहते हैं यह देह अभिमान की बिमारी है ऐसी है बात मत पूछो। कोई को यह बिमारी लगती है तो एकदम चचर होकर लगती है। छोड़ती ही नहीं। श्रीमत पर न चल अपनी देह अभिमान में चलते हैं। तो चोट बड़ी जोर से लगती है। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं। कैसे2 गिर पड़ते हैं। जैसे चन्दा। अभी कहती है ज्ञान आदि यह सभी गपोड़े हैं। धोखेबाजी है। वेद शास्त्र आदि पढ़नी चाहिए। देखो माया की चोट कैसी जोर से लगती है। एकदम भक्ति मार्ग में चली गई तो वैसा ही गर्क हो जायेगा ना। कहती है भगवान तो है ही सर्वव्यापी। हम तो यहां फांसी में आ गई थी। माया कैसे नाक से पकड़ कर गिरा देती है। बुधि बिल्कुल ही मार देती है। ऐसे बहुत निकलेंगे जो कहेंगे ज्ञान कुछ है नहीं। ऐसे2 संशय बहुतों को पड़ती हैं। जब कोई बहुत तंग करते हैं तब मुरली में नाम डालते हैं। भगवान को बुलाते हैं आकर हमको पत्थर बुधि पारस बुधि बनाओ। और फिर उनके भी विस्थ हो तो क्या गति होगा। एकदम गिरकर पत्थर बुधि बन जाते हैं। बच्चों को यहां बैठे, उठते बैठते यही खुशी रहनी चाहिए। स्टुडन्ट लाईफ इज दी बेस्ट लाईफ है। बाप कहते हैं इन से और कोई पढ़ाई ऊंच है क्या। दी बेस्ट तो यही है। 21 जन्मों का फल देते हैं। तो ऐसी पढ़ाई में कितना अटेन्शन देना चाहिए। कोई तो बिल्कुल अटेन्शन नहीं देते हैं। माया नाक कान काट लेती है। बाप खुद कहते हैं आधा कल्प इनका राज्य चलता है। तो ऐसा पकड़ लेती है जो बात मत पूछो। इसलिये बहुत खबरदार रहो। एक दो को सावधान करते रहो। शिव बाबा को याद करो। नहीं तो माया कान नाक काट लेगी। फिर कोई काम के न रहेंगे। बहुत समझते भी हैं हम लक्ष्मी नारायण का पद पायें इम्पोसिबुल है। इसके लिये तो पुरुषार्थ करना पड़ता है। थक कर पस्त हो जाते हैं माया से हार खा लेते है। एकदम किचड़े में जाकर पड़ते हैं। सर्विस के बदली डिस सर्विस करने वाले बहुत हैं। हरेक सेन्टर पर ऐसे निकल पड़ते हैं। देखो हमारी बुधि बिगड़ती है तो समझना चाहिए माया ने नाक से पकड़ा है। याद की यात्रा में बहुत लस हैं। बहुत खुशी भरी हुई है। कहते भी हैं खुशी जैसी खुराक नहीं। दुकान में ग्राहक आते रहते हैं। कमाई होती रहती है तो कब उनको थकावट नहीं होगी। भूख नहीं मरेगी। बड़ी खुशी में रहते हैं। तुमको भी अथाह बेशुमार धन मिलता है। तुमको तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। देखना चाहिए हमारी चलन दैवी है या आसुरी है। समय बहुत थोड़ा है। अकाले मृत्यु की भी जैसे रेस है। एक्सीडेन्ट आदि देखो कितने होते हैं। तमोप्रधान बुधि होती जाती हैं। बरसात जोर से पड़ेगी उनको भी कुदरती एक्सीडेन्ट कहेंगे। जोत सामने आया कि आया। लिखते भी हैं समझते भी हैं एटमिक बम की लड़ाई झट छिड़ जायेगी। ऐसे खौफनाक काम करते हैं, ~~xxxxxxxx~~ तंग कर देंगे तो फिर लड़ाई भी छिड़ जायेगी। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।